भूमिका।

क्या इसे न देखियेगा?

बड़े हर्ष का विषय है कि आज इस ग्रन्थ को लेके मैं आप की सेवा में उपस्थित हो सका। यद्यपि यथार्थ में इस पुस्तक के लिखने में मेरी किसी प्रकार की बड़ाई नहीं है, क्योंकि, इसे मैंने "Over Africa in a Baloon" नामक एक अङ्गरेजी ग्रन्थ से अनुवाद किया है;—जिसके रचयिता, मिष्टर विलियम मेरे ग्रेडन महाशय हैं, और वही इसके असली प्रशंसा के पात्र भी कहे जा सकते हैं;—तथापि हर्ष मुझे केवल इस बात का है कि एक विदेशीय भाषा की पुस्तक को (चाहे जैसे मुझसे बन पड़ा हो) अपनी भाषा में अनुवाद कर, मैं उन पाठकों की सेवा में समर्पि कर सका, जो अङ्गरेजी भाषा से बिलकुलही अज्ञ हैं।

जिन महाशयों को अवसर पड़ा है वे जानते होंगे कि बाद, कपोलकल्पित लेखों की अपेक्षा एक कठिन कार्य है—कैसे कठिन कार्य है?—वा—कहां लों कठिन कार्य है? इसे यथोचित रूप से समझाने को; हमें आवश्यकता और समय दोनोंही नहीं है। तात्पर्य यह कि इस कठिन कार्य में पहिलेही पहिले हाथ डाल हम कहां लों कृतकार्य हुये हैं—केवल उसी को देख पाठ को चुपके न बैठ रहना चाहिये—कारण यह कि श्रीयुत बाब

वर्म्मा प्रोप्राइटर भारतजीवन प्रेस की अनुग्रहों ने हमारे मनचले चित्त को इतना चञ्चल कर रक्खा है कि उसने स्थिर होके बैठने की कसमही खा ली है—अभी कलही की तो बात कि हार्दिक उद्वेग ने मचल २ के एक ऐसा अनूठा और वृहत् ग्रन्थ तैयार करा दिया है कि जो हिन्दी उपन्यासों में बिलकुल नया और एकही कहे जाने के योग्य है ! फिर है भी तो यह ग्रन्थ मिष्टर रेनाल्ड जैसे सुविख्यात लेखक के ग्रन्थ का अनुवाद, जिनके उपन्यासों के जगत में डङ्के बजे हुये हैं। इस बड़े ग्रन्थ का नाम है नर पिशाच ! उपन्यास के चातकरूपी प्रेमियों को इस अनोखे स्वाती के बूँद की अवश्यही प्रतीक्षा करनी उचित है जो शीघ्रही वारिदरूपी भारतजीवन यन्त्रालय से बड़े चमक दमक के साथ बसरनेवाला है।

काशी
२० अप्रैल् सन् १९०० ई०

आपका कृपाभिलाषी
हरिकृष्ण जौहर।

भयानक भ्रमण।

रात के साढ़े सात बज चुके हैं, लगडन नगरी के सुप्रसिद्ध सम्पादक मिष्टर राबर्ट सुडामोर अपने सजे सजाये कमरे में, जो केंगसिंगटन महल्ले की एक बड़ी भारी इमारत मे था, बैठे चुरुट पी रहे हैं।

धीरे २ समय व्यतीत होता गया और अब सिर्फ २० मिनिट आठ बजने को बाकी थे, कि अचांचक एक घण्टी बड़े जोर से बजने लगी, जिसे सुन्तेही सम्पादक महाशय ने मुहँ का चुरुट उँगलियों में ले लिया, और दरवाजे की ओर स्थिर [illegible]

हुये, मानो किसी ध्यान ने उन्हें घबड़ा सा दिया, और फिर जवान की तरफ, विना कुछ बोले चाले कुछ देर तक खड़े देखते रहे।

सम्पादक—तुम अभी २ दूर से चले आते हो, और इस्में कोई सन्देह नहीं कि थकने से तुम्हें भूख लग गई होगी! परन्तु हेक्टर, भोजन के तैयार होने में अभी आधे घण्टे की देर है और इस्के बीच में मैं तुम से आज एक बड़ेही जरूरी विषय पर बात चीत किया चाहता हूं।

यह सुन्तेही हेक्टर उनकी ओर चौंक कर देखने लगा क्योंकि इसवक्त उस्के हर तरह से खबर रखनेवाले दयालु-चित्त, सम्पादक का गला बड़ा भारी हो रहा था।

सम्पादक—हेक्टर! आज ठीक १८ बरस हुये कि तुम्हारे पिता, राल्फ हाल्डेन मेरे इसी कारखाने में नौकरी के लिये आये थे। उस्वक्त उनकी उम्र ३० बरस की थी और हाथ पैर की गठन, चेहरे का आकार, गले की आवाज, सब तुम्हारीही जैसी थी। उनकी कुछही देर की बात चीत से मुझे [illegible] तरह मालूम हो गया कि वे एक बड़ेही बुद्धि-[illegible] ऊंचे दरजे के भले आदमियों में से हैं। हां [illegible] हमारी बातों का तो जवाब [illegible] थे परन्तु अपनी [illegible] न कहते, जिस्से हमें मालूम हो गया कि यह

भली जान पड़ीं और न जाने क्यों मुझे उनकी ओर से एक बड़ाही प्रेम हो गया और मैंने उनको अपने कार्यालय में एडीटरी की जगह दे दी और फिर इस काम देने का मुझे कभी अफसोस न करना पड़ा। वे हमारे यहां अपने कामों के कारण बड़ेही बहुमूल्य गिने जाने लगे और जब वे यहां से गये तो मुझे ऐसा मालूम हुवा कि मानों मेरी दाहिनी भुजा टूट गई। लेकिन हेक्टर तुम अपने मन में विचारते होगे कि इन बातों के कहने से जो तुम्हें अच्छी तरह मालूम हैं मुझे क्या फायदा! पर नहीं! जो कुछ मैं कहता हूं उसे अच्छी तरह सुनो, यह सब जो मैं अभी कह गया यह आगे के बात की केवल भूमिका थी! सात साल तक तुम्हारे पिता यहां रहे, और इस्के बीच में मेरे ध्यान तक में कभी यह बात न आई कि इनके कोई लड़का है! और यह ध्यान तो दूर रहा मुझे यहभी न मालूम हुवा कि वे रहते कहां हैं।

तुम्हारे पिता सन् १८६७ में हमारे यहां उक्त पद पर [illegible]युक्त हुये और सन् १८७४ में यह समाचार [illegible] [illegible]। कि उन महाशयों का दल, जो अफ्रिका में पूर्व दिशा [illegible] [illegible]श्चिम की ओर यात्रा करने तथा उस्की भीतरी अव[illegible] [illegible]नुमान करने के निमित्त गया था, वह अब पश्चिम[illegible] पहुँचाही चाहत[illegible]। यह समाचार पातेही हमारी [illegible] [illegible]कि अपने सम[illegible]रपत्र के निमित्त किसी अच्छे स[illegible] [illegible]उस दल से मि[illegible] तथा उनसे पूछ कर यहां [illegible]

भेजने के लिये भेजें। इसपर राल्फ हाल्डेन तुम्हारे पिता ने स्वयं वहां जाने की इच्छा प्रगट की और एक भारी बादाविबाद के उपरान्त उनकी यह इच्छा मान ली गई।

अपने जाने के एक दिन पहिले वह मेरे पास इसी कमरे में आये, और आकर मुझे वह भेद बताया जिसे सात बर्ष तक उन्हों ने बड़ी सावधानी से छिपा रक्खा था; और वह यह था कि उनका एक १० बर्ष का लड़का है, जिसे वह बड़ाही प्यारा रखते हैं; और जिस्से अलग होना उन्हें बड़ाही बुरा मालूम होता था। हेक्टर! वह प्रिय पुत्र उनके तुम्हीं हो! तुम्हारे पिता ने बड़ीही नम्रता से मुझ से कहा कि उनके चले जाने पर मैं तुम्हारी हरतरह खबर लूं और किसी प्रकार का कष्ट न होने दूं! उन्होंने मुझे बहुत सा द्रव्य, तुम्हारे पढ़ाने लिखाने के लिये दिया और एक सन्दूकची जिस्के ताले पर मुहर की हुई है और तुम्हारे नाम का एक पत्र भी दिया। उस पत्र को तुम्हारे पिता बहुतही बहुमूल्य समझते थे क्योंकि उन्हों ने देती समय कह दिय[illegible] [illegible] इस्की भली प्रकार खबरदारी करना, यदि मुझ पर को[illegible] [illegible] आपड़े तो तुम इसे खोलना और जो कुछ उसमें लिख[illegible] [illegible] के अनुसार करना। हेक्टर! यह सब मैंने स्वीकार क[illegible] [illegible] उस्के दूसरे दिन सावधानी से तुम्हारे पिता अफ्रिका [illegible] सिधारे। इस्के उपरान्त की घट[illegible] तुम्हें मालूमही है [illegible] कि तुम्हारे पिता ने दिया था उ[illegible] के अनुसार मैं[illegible] [illegible]न ढुंढवाया, तुम एक किरा[illegible] मकान में रहते

मैं तुम को वहां से यहां लाया। पहिले तुम अपने पिता के निमित्त बहुत रोते थे और तुम्हें केवल वही पढ़ना आता था जो कुछ तुम्हें वह सन्ध्या को पढ़ाते थे परन्तु मैं तुम्हें अपने लड़कों के साथ स्कूल भेजने लगा! और ईश्वर जानता है कि ठीक उन्हीं की तरहं मैं तुम्हारी खबर लेने लगा।

हेक्टर—वास्तव में महाशय आपने मेरे लिये बहुत कुछ किया ईश्वर इस्का बदला आपको दे।

सुडामोर—उसी साल की जुलाई में हमारे कार्यालय को आग से भारी हानि पहुँची और उसी के दो दिन उपरान्त तुम्हारे पिता के बारे में बड़ेही दुखद समाचार सुन पड़े अर्थात् मर्क्युरी नामक गुब्बारे का कुछ भाग कि जिसपर तुम्हारे पिता और केप लोपेडो का रहनेवाला उनका एक साथी दोनों सवार होकर गये थे नाईजर नदी में बहता हुवा मिला; दोनों की मृत्यु में कोई सन्देह नहीं। मुझे तुम से और भी कुछ कहना है, वह यह कि वह पत्र जो तुम्हारे पिता ने मुझे दिया उसे मैंने अपने आफिस के एक सन्दूक में रख दिया और आग लगी तो उसी में वह भस्म हो गया और इसतरह तुम्हा[illegible] सम्बन्ध के प्रत्येक चिन्ह लुप्त हो गये; परन्तु नहीं अब [illegible] एक है!

यह कह कर मिष्टर सुडामोर ने एक सुवर्ण [illegible] अपने सन्दूक से निकाला और हेक्टर को दे दिया।

हेक्टर की कांपती हुई उंगलियों ने उस यन्त्र को [illegible]

से एक औरत कि सुनहली बालों की लट निकली, और यन्त्र के दूसरे ओर एक स्वरूपवती बाला की तस्वीर थी जिस्की उम्र २० बर्ष से विशेष न होगी। हेक्टर ने पहिले इस तस्वीर की ओर दृष्टि की और फिर अपने पालनेवाले को देखकर चिल्ला उठा "मेरी मां"!

मुडामोर—मैं भीं यही सोचता हूं! उस सन्दूकचे में बस यही था और अब उस पत्र का लेख कभी न मालूम होगा, तुम्हारे पिता ने यह भी कहा था कि यदि वह (तुह्मारा पिता) मर जावे तो तुम्हें उच्च श्रेणी की शिक्षा दिला कर ओक्सफोर्ड कालिज में भेज दिया जावे, तुम अब इकीस बर्ष के हुये और यही समय है कि तुम्हारे पिता कीं इच्छा पूर्ण की जाय।

हेक्टर ने इसबात का कुछ उत्तर न दिया और कुछ सोचता रहा, अन्त वह बोला कि सच तो यों है कि मै बड़ाही [illegible]भागा हूं! आजही मैंने य[illegible] इच्छा की थी कि मैं अपने [illegible] पिता के भूतपूर्व जीवन का वृत्तान्त पूछूंगा। मुझे वे [illegible] बर्ष, कि जिनमें मैं अपने पिता के साथ था भली प्रकार [illegible] हैं परन्तु उस्के पहिले क्या हुवा था, यह मुझे कुछ याद [illegible]।

[illegible]डामोर—और वह तुम्हें यादही कैसे होने लगा! क्योंकि [illegible] तुम्हारे पिता का मुझ से प्रथम साक्षात् हुआ तो तुम्हारी [illegible] ३ बर्स की होगी। मुझे यह मालूम होता है कि वे ल- [illegible] के रहनेवाले नही थे। अच्छा कुछ दिनों के

उपरान्त सब मालूम हो जायगा लेकिन इस समय तुम्हें उन लोगों का पता लगाने के लिये व्यर्थ रुपया और समय न नष्ट करना चाहिये। मैं सदैव तुम्हें अपने पुत्र के समान जानता था और जानूंगा परन्तु देखो अब घण्टी बजी, चलो खाने के उपरान्त बातें होंगी।

इस्के उपरान्त दोनों उठे तब हेक्टर ने कहा महाशय! जो सलाह आपने मुझे दी है उसे मैं हृदय में रखता हूं! और इस्के धन्यवाद के लिये मेरी जिह्वाही ऐसी कहां है? और यह यन्त्र! हां! यही यन्त्र! मुझे तन मन से भी कुछ विशेष प्रिय रहेगा और ईश्वर ने चाहा तो इस भेद के पर्दे को मैं अपने सामने से अवश्य एक दिन उठा दूंगा॥

पहिला बयान।

जो कुछ ऊपर लिख आये उस्के ठीक चार वर्ष के उपरान्त अर्थात् सन् १८८९ की जुलाई में ठीक सुबह के समय [illegible]
बिक्टोरिया रेलवे ष्टेसन पर ट्रेन से उतरा और एक [illegible]
मह्ल्ले तक की केराया कर, उसी ओर चला [illegible]
र[illegible] में कारपेथियन पहाड़ की सैर कर [illegible]
इ[illegible]ने बी० ए० पास कर लिया है [illegible]
के बदले में मिष्टर मुडामोर ने इ[illegible]
फिरने की दे दी थी। इस चा[illegible]
मुडामोर को नहीं लिखा [illegible]

डाक विभाग का बन्दोबस्त, कुछ भरोसा करने योग्य नहीं था और इस्के अतिरिक्त इस्की यह इच्छा भी थी कि अचांचक मकान पहुँच कर मिष्टर सुडामोर को मैं चकित करूंगा।

पर यह क्या ? गाड़ी केंगसिंगटन महल्ले में पहुँचा और जब मिष्टर सुडामोर के दरवाजे पर खड़ी हुई तो उसने उन के मकान में ताला बन्द पाया ! अब पड़ोस के रहनेवालों से पूछने पर यह दुखःमय समाचार सुन पड़ा कि मिष्टर सुडामोर का जून मास में अचांचक स्वर्गबास हो गया और उनकी स्त्री अपनी लड़की सहित, फ्रांस को मन बहलाने के लिये चली गई ! इस्से ज्यादा हेक्टर को और कुछ भी न मालूम हुवा ! अस्तु बेचारा गाड़ी में बैठा, और उसने मिष्टर सुडामोर के कार्यालय की ओर गाड़ीवान को चलने को कहा।

जब गाड़ी घड़घड़ाती हुई नाफाक प्ट्रीट के होटल के [illegible] नीचे से जा रही थी तो इसने गाड़ीवान को ठहरने के लिये [illegible] आप उतर कर होटल में गया और वहां दो कोठ- [illegible] और उन में अपना असबाब रख गाड़ी को [illegible] चलने को कहा।

[illegible] पहुंच कर इसने गाड़ी को बिदा [illegible]र [illegible]या। यहां मिष्टर पेजेड से जो मि[illegible]र [illegible]ब उन के स्थान पर कार्य देख [illegible] सब वृतान्त कह सुनाया। [illegible]ी दुःख होता है कि हमारे

हिसेदार महाशय का ६ सप्ताह गुजरे की स्वर्गबास हो गया! और इस अचांचक मृत्यु के कारण वह कोई लिखा पढ़ी अपने धन दौलत के बारे में न कर सके इसलिये नियमानुसार उनकी कुल सम्पत्ति का अधिकारी उनका लड़का हुवा। आप के हिसाब में केवल ५० पाउण्ड होते हैं यदि आप कहें तो मै उस्के लिये एक चेक लिख दूं।

इस्समय हेक्टर की हैरानी, कोई आश्चर्य की बात न थी पिता के सदृश इस्का दयालु जन स्वर्गगामी हो चुका था अन्तिम समय वह इस्के निमित्त कुछ न कर गया, अब संसार में हेक्टर के अपने वेही ५० पाउण्ड थे! परन्तु उसने इस्बात का कुछ ध्यान न किया कि मैं गरीब हूं क्योंकि वह जानता था कि मैं सुशिक्षित चालाक और तन्दुरुस्त युवा हूं! पर हां दुखः केवल उसे इस्बात का था कि वह व्यक्ति मर गया जो इसे इस्के पिता से भी विशेष चाहता था।

हेक्टर लड़खड़ाता हुवा आफिस से निकला और बे मत-लब, बिना बिचारे जिधर पैरों ने राह दिखाई उसी ओर जाने लगा। दो घण्टे तक वह इसी तरह पागलों की नाईं घूमता रहा, लाखों आदमी जो इधर से उधर आते जाते तथा अपने २ कामों लगे थे उनके बोलने चालने के घोर नाद ने भी [illegible] चौंकाया! अन्त चलते २ उसने एक स्थान पर सिर [illegible] मा[illegible] कोई स्वप्न से चौंकता है [illegible] अपने को लडगेड

कस के निकट पाया वहां से टेम्स का किनारा निकट था, अत एव यह उसी ओर चला।

अब यह एक बिलायती समाचारपत्र के दफ्तर के नीचे से जा रहा था तो उसने उक्त आफिस के दरवाजे पर एक बड़ी तस्वीर लगी देखी जिस्के इर्द गिर्द भीड़ लगी हुई थी ! हेक्टर भी उसी ओर चला और निकट पहुंच कर उसने उस तस्वीर में एक अंग्रेज तथा एक भयानक हबशी को खड़े बात चीत करते, बना पाया, उस्के नीचेही मोटे २ अक्षरों में यह लिखा था—

"मुर्दे का समाचार।

मर्क्युरी नामक गुब्बारा जिस्पर मिष्टर राल्फहाल्डेन अफ्रिका की ओर रवाना हुये थे उस्का एक भाग सर विल्फ्रेड कोवेन्ट्री को मिला है और उन्हें यह भी पता लगा है कि मिस्टर राल्फहाल्डेन वहां किसी स्थान में कैद हैं।"

हेक्टर ने एक बार पढ़तेही सब मतलब समझ लिया और उस्की ऐसी अवस्था हो गई कि लोग आश्चर्य से उस्की ओर देखने लगे। परन्तु एकही मिनिट के उपरान्त इसने अपने चित्त को सम्भाला और आगे बढ़ गया।

पहले तो इसे बड़ी प्रसन्नता हुई! और बातही कुछ ऐसी ...ल्फहाल्डेन इस्का पिता कहीं अफ्रिका में जीवित माना ... परन्तु इस्के उपरान्तही उस्की प्रसन्नता गाढ़ दुख से

बदल गई ! अर्थात् अब वह अपने पिता को कैसे छुड़ा सक्ता था ! ५० पाउण्ड में तो यह होना असम्भव था उतने से तो शायद वह कठिनता से अफ्रिका के किनारे तक भी न पहुंचेगा ! आह ! इस समय, मिष्टर सुडामोर का उसे ध्यान आया, और उनके न होने ने इस दुखः की अग्नि में घी का काम कर दिखाया। हां ! शायद यह समाचारपत्र वाला अपने आप से हमें उनकी खोज में भेजे ! जैसा कि न्यूयार्क हेरोल्ड ने डाक्टर लिविंग-स्टोन के लिये किया था। यह बिचार कर वह उस्के एडीटर से मिलने के निमित्त ऊपर जाने लगा।

अभी वह दरवाजे के भीतर पैर रखताही था कि एक जवान आदमी से जो ऊपर से नीचे आ रहा था इस्से भेंट हुई और उसी के पीछे एक मोटा, नाटा, और अधेड़ बयस का मनुष्य उतर रहा था जिस्के पहिनावे से प्रतीत होता था कि वह जहाज़ी है।

वह जवान मनुष्य, हेक्टर को देखतेही चिल्ला उठा ! "हा हेक्टर ! कैसी खुसी की बात है, यार ! मैं तुम्हारेही मिलने के लिये जा रहा था (फिर कर अपने मोटे और नाटे साथी से) कप्तान जोली ! मैं आप को अपने साथी से परिचित कराता हूं ! आप मेरे बड़े मित्र हैं, आप का नाम हेक्टर हाल्डेन है, [illegible] इन्हीं के बारे में मैं अभी आप से बात चीत कर रहा था।

क[illegible] —आप से मिलकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई !

यह कहकर उसने अपना मोटा और मजबूत हाथ हेक्टर के [illegible]थों में दे दिया।

हेक्टर—मुझे आशा है कि आप का मिज़ाज़ अच्छा होगा, मुझे भी आप से मिलकर बड़ीही प्रसन्नता हुई। (जवान से) फिलिप्! मेरे यार मैं बड़ी, कठिनता में पड़ा हूं, परन्तु पाहिले किसी एकान्त स्थान में मुझे चलना चाहिये जिस्में वहां मैं अपनी राम कहानी सुनाऊँ! अच्छा वह तख्ता जो दरवाजे पर लगा है उसे तुमने देखा! कुछ उस्का मतलब भी समझे, मेरे पिता जीवित हैं, और अफ्रिका में कैद हैं। साथही भाई! मैं उनकी सहायता से लाचार हूं।

फिलिप—अरे यार इसी के लिये तो हम तुम्हें ढूंढ़ने को थे, अच्छा तो आओ आइसिस क्लब में चलें और वहां इस बिषय में सलाहें होंगी राह में तुम अपनी कहानी कहते चलो!

यह कहकर उन्होंने एक गाड़ी केराये पर की और उस्में बैठ कर सब, आइसिस क्लब की ओर चले। राह में हेक्टर ने अपना दुखड़ा आदि से लेकर अन्त तक कह सुनाया और अभी उसने उसे अन्त तक पहुंचायाही होगा कि गाड़ी, आइसिस क्लब में पहुंच गई।

यह लोग उतर कर भीतर गये और भोजन करने के कमरे में जा बैठे! इस समयं वहां और कोई न था और कुछ ही देर के उपरान्त भोजन इन लोगों के सामने टेबिल पर [illegible] दिया गया।

फिलिप—(खाते २) हेक्टर! मैं देखता हूं कि तुम बहुत [illegible] रहे हो, तो अच्छा मैं तुम्हारी इस व्यग्रता को अभी [illegible]

देता हूं। जब हम लोग कालिज में पढ़ते थे तो तुम्हें स्मरण होगा कि मैं कभी २ अपने चाचा, सर बिल फ्रेड कवेरट्री के बारे में बात चीत किया करता था। वे एक बिचित्र मनुष्य हैं, इंग्लेण्ड में इनका आना योंही कभी होता है नहीं तो सदैव यह पृथ्वी के विचित्र २ स्थानों म भ्रमणही किया करते हैं। यह मेरे चाचाही हैं जिन्होने मर्क्यूरी गुब्बारे का एक भाग अशान्ती के एक रहनेवाले से शाड नामक झील के पास पाया था। यह सब बातें तो समाचारपत्रों में प्रकाशित होही चुकी हैं! अब हम तुम्हारे हित की एक नई बात सुनाते हैं। कप्तान जोली', जो मेरे चाचा के बड़े पुराने दोस्त हें इंग्लेण्ड में केवल एक बड़ा गुब्बारा खरीदने क निमित्त आये हैं, और जिसे एक सप्ताह में यह लेकर चले जाँयगे। हमारे चाचा की यह इच्छा है कि वह इस गुब्बारे में नगर लेगोस से सवार हो कर अफ्रिका के भीतरी भाग में तुम्हारे खोये हुये पिता की खोज में जायें। मेरे चाचा आज कल लेगोस में हैं और मेरी तथा कप्तान साहब की राह देखते होंगे। कप्तान साहब से मेरे चाचा ने यह भी कहा था कि ये उनके एक दोस्त को, जिनका मकान यहीं है अपने साथ लेते आवें! लेकिन बदकिस्मती से, नहीं नहीं सौभाग्यवश, वे अमेरिका पहिलेही से चले गये हैं। तो मेरे प्यारे हेक्टर! क्या तुम उनके स्थान पर चलने के लिये तैयार हो?।

हेक्टर यह सुनकर खड़ा हो गया और खुशी के मारे आवाक् हो इधर उधर देखने लगा और फिर बोला। क्या? जो कुछ तुमने कहा वह हँसी तो नहीं है? यह हमारे लिये बहुत कुछ है, इसका धन्यबाद मैं किन शब्दों में करूं?

फिलिप ने हेक्टर को कुरसी पर बैठा लिया और कहा— "बस हेक्टर बस! हमें स्वयं तुम्हें धन्यबाद देना है, तुम्हारे साथ रहने से हमें कैसी प्रसन्नता होगी! और जो खर्च के बारे में कहो तो भाई! हमारे चाचा के साथ रहने में किसी को भी खर्च करने की आवश्यक्ता नहीं होती! और सब बातें कप्तान साहब तुम्हें स्वयं बता देंगे। हमारे चाचा की ढूढ़ने की इच्छा, उस खोये हुये व्यक्ति के लड़के के साथ रहने से और भी प्रबल हो जायगी। हां हेक्टर! ऐसे भ्रमण में जो २ कष्ट और भयानक आपत्तियां ह उनसे तो आशा है कि तुम भली प्रकार अभि[illegible] होगे।

हेक्टर—अजी कैसा भय, और कहां की आफत, मैं धन्यबाद सहित तुम्हारे साथ चलूंगा! इस समय मैं समझता हूं कि मेरे बराबर इतनी बड़ी नगरी लण्डन में कोई भी प्रसन्न न होगा। और न अब मुझे कोई तैयारी [illegible] करनी है और न किसी से मिलना ही है, क्योंकि प्रथम तो मेरा कोई है ही नहीं और है भी तो उसी के मिलने के निमित्त अभी मैं जाता हूं इ[illegible] चाहे आगही का समुद्र क्यों न बीच में उमड़ आये।

इसके उपरान्त सब आइसिस क्लब से अपने २ घर को ग[illegible]

दूसरा बयान ।

गिनीं की खाड़ी में लेगोस नामी एक टापू है । यह टापू इस समय हमारी ही भारतेश्वरी के अधिकार में है । इस्में एक नगर भी टापूही के नाम का है, जिस्की आवादी ४० हज़ार के लग भग है । हमारे पाठकगण यदि ३१ अगस्त सन् १८८६ को इस लेगोस नगर के आसपास कहीं होते तो उन्हें एक बिचित्र तमाशा दिखाई देता । नगर के बाहर मैदान में एक बड़ा लम्बा चौड़ा गुब्बारा हवा में फूल रहा था और चारो ओर फरफराते हुये भरडों से मैदान घिरा हुवा था, और यदि कोई तीक्षण दृष्टिवाला चाहता तो गुब्बारे का नाम जो मोटे २ अक्षरों में "एक्सप्लोरर" लिखा था पढ़ लेता । गुब्बारे के चौखूटे और चारों ओर से घिरे खटोलने के निकट पांच बड़े बीर और साहसी पुरुष खड़े थे । और ये सर बिल्फ्रेड केबेन्ट्री, कप्तान जोली, फिलिप, हेक्टर, और एक हबशी गुलाम जिस्का नाम च्याको था खड़े थे । इनको घेरे हुये एक बड़ा भारी भुण्ड योरोपियन तथा अन्य जातियों का, लेगोस के हाकिम, और अन्य उच्च पदाधिकारियों का खड़ा था । विशेषतः इस्में नगरबासी थे जो बड़े आश्चर्य से इस तमाशे को देख रहे थे ।

पाठकगण ! इस्के पाहिले कि हम इन्हें बायु पर उड़ावें थोड़ा बृतान्त इनलोगों का आप से कह देना उचित समझते

सर बिल्फ्रेड केबेन्ट्री इंगलिस्तान के बेरेन नामी उच्च के अधिकारी थे जिसे हम अ[illegible]नी भाषा में नवाब कहना

समझते हैं। इनका कद लम्बा, शरीर हृष्ट पुष्ट, तथा चेहरे से बीरता झलकती थी, वयस् इनकी पचास और साठ के मध्य में थी! बाल सुफेद और भूरे दोनोंही प्रकार के पाये जाते थे। इनके मुख के आकार से यह भी विदित होता था कि उन्होंने अपने जीवन में किसी समय कोई बड़ा भारी दुःख उठाया है। यद्यपि ये बड़े अमीर आदमी थे तथापि इन्हें अपना महल छोड़े लग भग २० बर्ष के हो गये थे और ये २० बर्ष इन्होंने केवल भ्रमणही में व्यतीत किये थे।

कप्तान जोली एक नाटे कद और गठीले बदन के मनुष्य थे, उनकी तोंद सामान्य से कुछ विशेष निकली हुई थी, इन के मुख से मसखरापन फटा पड़ता था इनको देखतेही पंच अखबारों की तस्वीरों का ध्यान आता था। कप्तान जोली की चालचलन जहाज़ वालों की सी थी। २० बर्ष पर्यन्त इन्होंने मल्लाही की थी और यदि सर बिल्फ्रेड से दैवात् साक्षात् न हो गया होता तो अबलों यह किसी जहाज के कमाण्डर हो गये होते। सर विल्फ्रेड से साक्षात होने पर, इन्होने मल्लाही छोड़ दी और ईश्वर की कृपा से इन्हें भी भ्रमण की बड़ी इच्छा थी, बस वह बिल्फ्रेड के साथ हो लिये और भूतपूर्व दस बर्ष से पृथ्वी के अनेक भागों में इनके साथ २ घूमते रहे।

हेक्टर से तो पाठकगण भली प्रकार परिचितही हैं!

फिलिप के निमित्त इतनाही बहुत होगा कि वह सर त्रि- [illegible] का भाञ्जा और उनका वा[illegible]स है, सर बिल्फ्रेड भी उसे

बड़ाही प्यार करते हैं और हर एक बात में उस्का ध्यान रखते हैं।

अब च्याको महाशय का परिचय बाकी रहा जो इस भ्रमण के मुख्य कारण हैं। यह जाति का अशान्ती था और जब यह केवल ६ बर्ष का था तभी बुदमा लोग इसे गुलाम बनाने के निमित्त पकड़ ले गये थे, और तब से अब तक यह अफ्रिका में इधर उधर घूमताही रहा, अन्त यह अपने कैद से भागा और सन् १८८९ में दैवात् सर विल्फ्रेड केवेन्ट्री से मिलगया इस्के पास एक चमड़े की बोतल थी जिसपर मर्क्यूरी नामी बेलून का नाम लिखा था। यह बोतल उसे शाड नामक झील के पास वहां के एक रहनेवाले से मिली थी और सर विल्फ्रेड के पूछने पर उसने यह भी बताया कि उधर यह समाचार प्रसिद्ध है कि एक सुफेद मनुष्य उधर की किसी जाति के पास कैद है।

सर बिल्फ्रेड को मर्क्यूरी बेलून का हाल भली भाँति मालूम था। इस समाचार के सुन्तेही उन्हें विश्वास हो गया कि वह सुफेद मनुष्य उसी गुब्बारे पर भ्रमण करनेवाला है और उन्हों ने उसी समय उस्के छुड़ाने का बिचार चित्त में ठान लिया; साथही उन को एक भारी भ्रमण का बहाना भी तो मिल गया था।

हमारे नौबाब साहब सायेंस के एक भारी ज्ञाता [illegible] उन्होंने बेलून (गुब्बारे) पर सवार हो कर वहां जाने क[illegible]

किया ! यद्यपि लोग कहते थे कि यह असम्भव है परन्तु उन्हें अपनी विद्या पर पूरा भरोसा था कि हम अवश्यही इस गुब्बारे पर शेड नामक झील पर्यन्त जा पहुँचेंगे ।

सर बिल्फ्रेड बातूनी न थे, वे बात के साथही काम कर दिखाते थे । चेको से मिलने के २ दिन उपरान्त उन्होंने कप्तान साहब को समझा बुझा कर गुब्बारे के निमित्त इंगलेण्ड भेजा था, जो पाठकगण को स्मरणही होगा । जब हेक्टर सर बिल्फ्रेड से लेगोस में मिला तो उसे देख कर वे बहुतही प्रसन्न हुये और उन्होंने उस्के पिता को छुड़ाने का उस्से एकरार भी किया ।

सब लोग हवा में उड़ने की तैयारी करने लगे । उन्होंने थोड़ी बहुत आवश्यकीय चीजें, जैसे बन्दूकें, कारतूसें, बिस्कुट, नमकीन गोश्त, एक पानी तथा एक ब्रांडी का पीपा, कुछ कम्बल यही सब लाकर उस्के खटोलने में रक्खा, इस्के अतिरिक्त और भी छोटीमोटी चीजें जो जङ्गलियों को पसन्द थीं अर्थात आईने, माले, कैंची, तमाखू, यह भी एक कोने में डाल दीं । तब सर बिल्फ्रेड ने गुब्बारे के निमित्त कुछ विशेष चीजें भी उस्में रक्खीं अर्थात् एक नकशा, एक कम्पास, एक बेरोमेटर, एक रस्सी की सीढ़ी, और एक लङ्गर !

सर बिल्फ्रेड को कुछ दिनों तक इच्छानुसार बायु के [illegible] की राह भी देखनी पड़ी थी ! अन्त जब एक दिन उनके [illegible] माफिक बायु उत्तर और पूरब के कोने के बीच में [illegible] उन्होने अपने साथियों को इस्से सूचित किया जिसे

सुन वे सब लोग भी बहुत प्रसन्न हुये ! और अब वे हैड्रो-जोन गैस से गुब्बारा भरने लगे । गुब्बारा क्रमशः गैस से भरते २ अपनी पूरी हद्द तक भर उठा और अपनी पूरी मोटाई में फूल कर इधर उधर हवा में उड़ने लगा ।

अब दिन के तीन बजे हैं। हज़ारों मनुष्य मैदान में जमा हैं। सर बिल्फ्रेड खटोलने पर एक हाथ रक्खे अपने मुलाकातियों से बिदा मांग रहे हैं। इनके चारों साथी इन्हीं के निकट खड़े इधर उधर देख रहे हैं।

"बिदा," "ईश्वर को सौंपा" यह सब कहने कहलाने के उपरान्त उन्होंने इस खटोलने में पैर रक्खा, इस्के उपरान्त कप्तान जोली ने अपने भारी शरीर का बोझा खटोलने में डाल दिया और फिर हेक्टर और फ़िलिप भी उस्में उचक आये ! नेको चढ़ती समय हिचकिचाने लगा परन्तु सर बिल्फ्रेड ने इसे खींच कर भीतर डाल लिया । उस समय हाकिम लेगोस ने उन रस्सियों को जो गुब्बारे को बांधे हुई थीं कटवा डालीं ।

रस्सियों के कटतेही गुब्बारा बिजली की तरह तड़पता हुवा पहिले तो ऊपर, और फिर बायु के बहाव पर चला इधर इस्के हवा मे जातेही लेगोस के किले से तोपों की सलामी सर हुई । जब भीड़ छँट रही थी और गुब्बारा क्षण २ में छोटा होता दिखाई पड़ता था तो हाकिम लेगोस चिल्लाये कि अब ये लोग मुर्दों से भी गये गुज़रे हैं ।

तीसरा बयान ।

जिस्समय गुब्बारा सिर घुमा देने वाली तेजी से हवा में उड़ा तो उस समय हमारे इस छोटे से झुण्ड का प्रत्येक मनुष्य पृथक् २ ध्यान में डूबा हुवा था। सर बिल्फ्रेड ने एक दृष्टि बेरोमेटर (वह कल जिस्से पृथ्वी का फासला जाना जाता है) और दूसरी कम्पास पर डाल कर कहा कि हमलोग इस समय पृथ्वी से १५०० फीट ऊँचे और अपनी ठीक राह पर जा रहे हैं।

यह बात उनकी किसी ने न सुनी, क्योंकि हेक्टर और फिलिप, गुब्बारे के एक कोने में पड़े आँखें फाड़ २ कर नीचे देख रहे थे और कप्तान साहब खड़े होकर उस गुब्बारे के मोटे डील डौल पर नेत्र जमाये दिल्लगी से कुछ कहते जाते थे। और च्याको खटोलने में औंधा पड़ा हुवा अपने दोनों हाथों से मुँह छिपाये था।

गुब्बारे पर भ्रमण करनेवाले अब अपने नीचे लेगोस के लम्बे चौड़े फैले हुये मैदान, समुद्र और बड़े २ टापू छोड़ते चले जाते थे। नगर की बस्ती अब पश्चिम के किनारे पर छूट गई थी जिस्के सामने बहुत से जहाज़ पानी पर अठखेलियां कर रहे थे।

इस मनोहर अकृत्रिम दृश्य के देखने में सब मुग्ध थे और [illegible]क वे बराबर यही सब देखते रहे जबतक कि गुब्बारा [illegible] तथा अभेद जङ्गलों के ऊपर नहीं पहुँचा, जो स्लेव कोष्ट

Slave-coast के किनारे के पास थे। अब अफ्रिका के पूर्वीय मैदान जो कुछ देर पहिले धुँधले दाग से दिखाई पड़ते थे एक के उपरान्त दूसरे सामने आते जाते थे।

गुब्बारा अब दो हज़ार फीट की ऊँचाई पर ठीक पूरब और उत्तर के मध्य में जा रहा था इस्समय इस्की चाल एक घंटे में पच्चीस मील के हिसाब से थी। सर बिल्फ्रेड अपने कलों से यह सब देखते जाते थे।

नीचे के छूटते हुये स्थानों में, कोई विशेष मनोरंजक बात न थी। एक सीधा फैला हुवा जङ्गली दलदल, जिस्में नदियां और खाड़ियां पृथ्वी काटकर अपना स्थान बनाये थे नज़र आता और इस्मे कहीं २ अन्न के लहलहाते खेत और झोंपड़ों के झुण्ड भी दिखाई पड़ते थे।

क्रमशः अन्धकार ने अपना बिशाल शरीर बढ़ाना प्रारम्भ किया। चारों ओर के दृश्य, एक एक करके, आखों से छिपते गये। मण्डली के प्रत्येक मनुष्य के पास एक २ कम्बल उपस्थित था, जिसे उन लोगों ने अपने ओढ़ने के लिये निकाला क्योंकि यहां अब उन्हें बड़ी सरदी जान पड़ती थी।

सर बिल्फ्रेड—हम लोग सरलतापूर्वक नीचे की गरम हवा में उतर सक्ते हैं, परन्तु हमारी यह इच्छा बिलकुल नहीं है कि हम अपने गुब्बारे के भरे गेस को अभी से व्यर्थ नष्ट [illegible] प्रारम्भ करें! और फिर ये कम्बल तो हमको जाड़े से [illegible] प्रकार बचा सकेंगे।

कप्तान—महाशय, यदि ये न भी बचा सकेंगे तो हमारे पास एक और बचानेवाली वस्तु है।

यह कह कर कप्तान साहब ने एक छोटा सा तेजाबी लम्प निकाला और उसे सलाई से जलाकर एक छोटा सा बटुवा काफी का चढ़ा दिया! फिर उस्के उपरान्त इस्के पीने में सभी मिल गये, सबके साथ चेको भी था, क्योंकि अब भय ने उस्का गला छोड़ दिया था और इस्का कारण यह था कि उसे भय दिलानेवाले दृश्य अब अन्धकार के पर्दे में छिप गये थे।

सर विल्फ्रेड—(काफी पीते २) मैं अनुमान करता हूं कि सौ में बीस भाग यह अच्छी बनी है! ऐसे समय में ऐसीही चीजें तो लाभदायक होती हैं।

कप्तान—तो क्यों महाशय अब मैं दूसरा बटुवा चढ़ाऊं?

सर विल्फ्रेड—नहीं! नहीं! एक प्याला इस्का बहुत है, दूसरा तो नींद उचाट कर देगा।

हेक्टर—(हँसते हुये) आज का यह अन्तिम भोज है! अब और कुछ नहीं!

सर विल्फ्रेड—तो अब इस्समय तुम्हारे सिवा, तुम्हें मीठी नींद सोने से और कौन रोकता है? हमलोग चौड़े खुले और साफ आस्मान में बेखटके भ्रमण कर रहे हैं! तनिक चेको की [illegible] देखो कैसी लम्बी ताने है और यह इसे कल कैसा [illegible]यक होगा।

उस अशान्ती के उदाहरण ने इन लोगों के चित्त पर कुछ भी असर न किया वे आपस में बक २ करते और जागतेही रहे। साथही नीचे के उन काले २ मनुष्यों के गावों को भी देखते जाते थे जिन में आग जल रही थी और जिनके सिरों पर से वे लोग बड़े बेग से चले जाते थे।

दो बजे रात को सर विल्फ्रेड ने अपने कम्पास से कुछ जाँच की और साथही भय के चिन्ह इनके चेहरे से झलकने लगे।

सर विल्फ्रेड—अन्त वही हुआ जिस्का भय लगा था। वायु की गति बदल गई और अब हमलोग ठीक उत्तर की ओर जा रहे ह।

हेकर—तो क्यों महाशय अब ऐसी घटना की क्या दवा है?

सर विल्फ्रेड—बस यही है; कि हमलोग पृथ्वी पर ठहरें और प्रातःकाल पर्यन्त हवा की चाल बदलने की प्रतीक्षा करें और उतनी देर मे आशा है कि वायु की चाल अवश्य बदल जायगी।

यह कहते कहते उन्होंने जल्दी से गेस के ढँकने की रस्सी खींची और वह बड़े ज़ोर की आवाज करती निकलने लगी।

सर विल्फ्रेड—लंगर छोड़ दो!

यह सुन्तेही कप्तान जोली ने एक लंगर छोड दिया! पहिले तो वह पृथ्वी पर्यंत पहुँचाही नहीं, परन्तु जैसे जैसे गुब्बारा नीचे उतरता गया वैसेही वैसे कई बार हलके झटके म[illegible] हुये और साथही वृक्षों की खड़खड़ाहट भी सुन पड़ी [illegible] बात यह थी कि लंगर वृक्षों के झुण्ड मे से होकर

था सर विल्फ्रेड यह देख कर बडी घवडाहट से कहने लगे कि अब लंगर किसी वस्तु को पकड़ता क्यों नहीं, गुब्बारा तो बहुतही धीरे जा रहा है ! अभी उन्होंने यह अच्छी तरह कहा भी न था कि एक ऐसा कड़ा झटका लगा कि जिस्से खटोलना हिल गया और गुब्बारा खड़ा हो गया।

सर विल्फ्रेड—अब इसने किसी चीज़ को पकड़ लिया, अब कोई नीचे जाये और लंगर को दृढ़ता से कहीं अटकाये, यह बात बडीही ज़रूरी है।

हेक्कर—तो नीचे मैं जाऊँगा मुझमें शक्ति भी बहुत कुछ है।

सर विल्फ्रेड—अच्छी बात है !

कप्तान जोली ने यह सुनकर रस्सी की सीढ़ी ऊपर बाँधकर लटका दी और अब वह गुब्बारा ठीक उसी के ऊपर लहरा रहा था जहां कि वह लंगर अटका था, रस्सी की सीढ़ी भी लंगर के साथही साथ इधर उधर वायु मे हिल रही थी।

सर विल्फ्रेड—अन्दाजन् इसनें किसी वृक्ष की डाल को पकड़ लिया है। देखो हेक्कर इस्का भली भाँति विश्वास कर लेना कि वह दृढ़तापूर्वक अटका हुवा है।

कप्तान—हेक्कर, देखो जी खूब सावधान रहना, रस्सी की सीढ़ी के डंडों को अच्छी तरह पकड़े रहना कहीं से पैर न [illegible]कने पावे।

[illegible]क्कर फिलिप की सहायता से खटोलने के किनारे पर खड़ा [illegible] और वहां से सीढ़ी पर उतर कर एक २ करके नीचे

जाने लगा। यह लुजलुजही सीढ़ी बड़ेही भयानक रूप से इधर उधर हेक्टर को लिये पेंगें ले रही थी। वायु के सन्नाटे इस्के दाहिने बायें से निकल जाते थे, परन्तु हेक्टर बेपरवाही से बराबर नीचे उतरताही चला गया और अन्त उस्का पैर किसी कड़ी बस्तु पर पड़ा। यह किसी वृक्ष की टहनी न थी, जैसा कि ऊपरवालों ने ध्यान किया था वरन् यह एक ढालुई और सम भूमि थी। हेक्टर ने सोचा कि यह अवश्य जमीन होगी और झुक कर उसने उस बस्तु को हाथ लगाया तो सूखे घास के गट्ठे हाथ लगे।

उधर उस्के साथियों को सीढ़ी न हिलने के कारण मालूम हो गया कि हेक्टर पृथ्वी पर उतर गया।

सर बिल्फ्रेड—(ऊपर से) देखो सावधान ! यदि लंगर तुम्हारे हाथ से छूट गया तो तुम कभी हम तक न पहुँचोगे।

ऐसी आफत् के नामही ने हेक्टर के रक्त को सुखा दिया और उस घोर अन्धकार में ऐसी आफत् से बचने के निमित्त उसने एक दियासलाई अपनी जेब से निकाली, और उसे अपनी फतुही पर रगड़ दिया ! सलाई बल उठी और इसने लङ्गर के देखने को चारों ओर दृष्टि उठाई, पर जैसेही उसने वहां के दृश्य को भली भांति देखा वैसेही उस्के मुहँ से एक लम्बी चीख निकल पड़ी। उसने अपने से दो कदम की दूरी पर लकड़ी की एक बड़ी भयानक मूरति जो बड़ी लम्बी थी खड़ी देखा, और यह [illegible] उसी देव की गरदन में अटका हुवा था। जब यह दिय[illegible]

बुझ गई तो इसने अपनी काँपती हुई उङ्गलियों से एक दूसरी और घिसी जिस्के प्रकाश में देखना प्रारम्भ किया। अब की जो कुछ उसने देखा उस्से उस्के पैर लड़खड़ाने लगे और वह पीछे हट गया ! दृश्य बड़ाही भयङ्कर था । अर्थात् उस मूरति के दोनो ओर दो बरछियां गड़ी थीं जिनपर दो मनुष्य के सिर काट कर रक्खे हुवे थे । ये सिर अंग्रेजों के थे और उन्हीं के निकटही किसी जाति का झण्डा रक्त से लतपत पड़ा था ।

हेक्टर ने देखतेही पहचान लिया कि यह झाण्डा फ्रान्सीसियों का है ! इस दृश्य ने हेक्टर को ऐसा डरा दिया कि उस्के मुहं से कोई शब्द न निकलता था । अन्त वह चिल्लाया "कोई नीचे आओ यहां मनुष्यों की खोपड़ीयां बरछियों पर गाड़ी हुई हैं और अभी उसने यहीं तक कहा था कि सहसा उस्के पैर तले की जमीन नीचे जाने लगी और बड़ी जोर से यह नीचे गिर पड़ा उसने इसपर बड़े कष्ट से अपने को सँभाला और अभी भली प्रकार उठा भी न था कि अन्धकार में से कुछ हाथों ने निकल कर इसे पकड़ लिया ।

चौथा बयान ।

इस अचांचक के आक्रमण से हेक्टर को मालूम हो गया कि वह किसी मुसीबत में है, उस्का गुप्त बैरी इसे पकड़े, तथा मुंह को बन्द किये इस्की छाती पर चढ़ा आता है और चित्र भयानक शब्द उस्के मुंह से निकल रहा है ।

भाग्यवश हेक्टर के दोनों हाथ छूटे हुये थे और इन्हीं से उसने छाती पर चढ़े आते अपने दुश्मन को जोर से ढकेल कर एक ओर गिरा दिया और अब यह उठाही चाहता था कि चारों ओर बहुतसी भयानक चिंघाड़ें सुन पड़ने लगीं।

हेक्टर उसी अन्धकार में उठकर चारो ओर दौड़ने लगा, परन्तु साथही एक मसाल बल उठी और अनेक हाथों ने उसे कसकर पकड़ लिया। अब इसने प्रकाश में जो कुछ देखा वह पाहिले से भी कुछ विशेष भयानक था।

उसने अपने को एक लम्बे और ऊचे झोंपड़े में कैद पाया इस्के चारों ओर घेरे हुये काले २ पिशाचों का झुण्ड रक्त की इच्छा से जीभ निकाले बैठा था। बहुत से मसालों की रोशनी से झोंपड़ा चमक रहा था और साथही हेक्टर की भयभीत निगाहों ने एक और त्रासदायक बस्तु देखी अर्थात् वह बहुत सी हथियारबन्द स्त्रियों के पहरे में था। यह स्त्रियां काहेको बरन् लम्बे और काले २ हाथ पैर की चुड़ैलें थीं। ये लम्बे२ पायजामे और उनपर चुस्त फतुहियां पहने हुई थीं। उनकी कमर एक लाल रङ्ग के कमरवन्द से कसी थी जिस्में बन्दूकें, छुरे, और कुल्हाड़ियां लटक रही थीं। इनके कानों में पीतल के मोटे २ [illegible] पड़े थे। ये देवस्वरूप चुड़ैलें अपने बैरी के चारों ओ[illegible] भयानक शब्द से चिल्ला २ कर नाच रही थीं। बात[illegible] यह थी कि वह गुब्बारा अपनी असली राह को छोड़[illegible]

डेहोमी में (जो फ्रांससी बिजय किये हुये स्थान के निकट था) आ पड़ा था और ये स्त्रियां शाह डेहोमी की अचल और अजीत सैन्य में की थीं, । लङ्गर इसी देश के एक गांव में इसी झोंपड़े की छत्त पर फँस गया था, क्योंकि वह मूरति झोंपड़े की छत्त पर रक्खी हुई थी ।

उस पिशाची झुण्ड ने कोई शारीरिक वेदना अभी तक हेक्टर को जो चुपचाप खड़ा कांपता था नहीं पहुंचाई थी, किन्तु वे लोग केवल इधर उधर कूद २ कर चिल्ला रहे थे ।

अन्त हेक्टर ने बड़ी हिम्मत करके झोंपड़े की छत्त की ओर दृष्टि उठाई जो ज़मीन से लग भग २० फीट के ऊंची थी वह स्थान अभी तक खुलाही था जहां से हेक्टर नीचे खींच लिया गया था। उस खुले स्थान से उसे तारे दिखलाई पड़ते थे! परन्तु गुब्बारा कहां था ? क्या उस्के साथी लङ्गर निकाल कर और उसे उस्के भाग्य पर छोड़ कर चले गये ? नहीं ! इस ध्यान ने उसे स्वयंही बड़ा लज्जित कर दिया क्योंकि वह अपने साथियों से कभी ऐसी आशा नहीं रखता था ।

अभी वह इसी ध्यान में था कि सहसा कोई बस्तु उस्के, और सितारों के बीच में आ गई। यह अवश्य गुब्बारा था! इस्के [illegible]तों ने इस्का पीछा अभी लों नहीं छोड़ा था, और इसे बचने की आशा [illegible] गई; परन्तु जैसेही उसने अपनी दृष्टि नीचे करी और उन [illegible]के जूथ को देखा तो वह आशा स्वप्नवत् बोध होने लगी। [illegible]यानक झुण्ड में से उस्के साथी उसे किसी प्रकार

नहीं निकाल सक्ते थे। भला सर बिल्फ्रेड और उनके साथी इस हथियारबन्द भारी झुण्ड के विरुद्ध क्या कर सक्ते हैं? कुछ नहीं! और अब इसे अपनी मृत्यु का पूरा भय हो गया। इसालिये उसने आनेवाली आपत्ति के निमित्त अपने को प्रस्तुत कर लिया।

अब वह भयानक चिङ्घाड़ मिट गई थी, और वह भयदायक झुण्ड आपस में अपनी भाषा में बात चीत कर रहा था! इतने में पीछे पैरौं के शब्द सुन पड़े और हेक्टर ने जो फिर कर देखा तो कुछ मर्दों को भी कोठरी के भीतर पाया। ये उन स्त्रियों से कहीं ज्यादा भयानक थे। इनके आतेही बात चीत प्रारम्भ हुई!

इनके पहिनावे से प्रतीत होता था कि ये लोग कोई उच्चश्रेणी के अफसर थे, क्योंकि वे मनुष्यों की खोपड़ियों की टोपियां जिनपर किसी विचित्र पखेरू के पर खुँसे थे पहने हुये थे। इनका शरीर बाघ की खाल से छिपा हुवा था।

जो बहस वे कर रहे थे वह कुछ देर के उपरान्त अन्त को पहुँची! और हेक्टर के लिये यह बड़ाही अच्छा था कि वह उनकी भाषा नहीं समझा सक्ता था। बहस के अन्त होतेही अब उनमें एक झगडा प्रारम्भ हुवा और हठात् सबके सब अपने कैदी के चारों ओर स्थान छोड़ कर दीवार से पीठ लगा लगा कर खड़े हो गये। खड़े होने के एकही पल के उपरान्त सब एकही स्वर से चिल्ला उठे और चुप हो गये।

बेचारा हेक्टर इस बिचित्र मामले को कुछ भी न समझा, पहले तो उस्का ध्यान गुब्बारे पर गया कि कदाच् इन्होंने उसे देख पाया हो परन्तु जब वे सब चुप चाप खड़े रहे तो उस्का यह भय दूर हो गया।

इधर यह पिशाची यूथ इस्तरह खड़ा था मानो किसी की प्रतीक्षा कर रहा हो कि इतने में एक लम्बा और सबसे भयानक राक्षस उस झोपड़ी में आया और हेक्टर के निकट खड़ा हो गया।

इस्की जटायें बड़ी लम्बी २ थीं और कपड़ों में केवल एक लँगोट कसे था इस्की दाहिनी बिशाल भुजा में एक खांड़ा चमक रहा था। हेक्टर के चित्त में इस्के देखतेही बिश्वास जम गया कि यह जल्लाद है। और वास्तव में वह था भी जल्लादही! क्योंकि उसने आतेही हेक्टर के कन्धे पर हाथ रख दिया और इसे घुटना टेक देने का इशारा किया। यह देखतेही बेचारे हेक्टर की हिम्मत बिलकुल जाती रही, वह अपने भयानक शत्रु का हाथ, कन्धे पर पडतेही कांप गया, उस्के पैर डगमगाने लगे। उस ने उस झुण्ड से इशारे में अनेक प्रकार की बिनती करनी प्रारम्भ की।

परन्तु आह! वह दृष्टियां जो उस्की बिनती के प्रत्युत्तर में उस्पर पड़ रही थीं कैसी रक्त को सुखानेवालीं और डेरावनी थीं, उनकी मूर्ति से झलकता था कि वह इस मृत्यु के तमाशे को देखने के निमित्त बड़ेहीउत्सुक हैं।

हेक्टर का सिर घूम गया और वह हाथ उठाकर ज़ोर से चिल्ला उठा! "सर बिल्फ्रेड ; मुझे बचाओ ! ! मेरी मदद करो!!! मुझे ये राक्षस मारे डालते हैं !!!!"

परन्तु हाय ! वहां कौन सहायता करनेवाला था, यह ध्यानही ध्यान था, वे उत्सुक राक्षस आपस में बड़बड़ाने और इसकी मृत्यु के निमित्त घबड़ाने से लगे।

जल्लाद ने हेक्टर का कन्धा बेरहमी से पकड़ कर एक झटका दिया जिस्से कि वह अपने घुटनों के बल आ रहा ! मृत्यु के सदृश वह खांड़ा अपने स्थान से चमक कर उस निर्दयी जल्लाद के सर से ऊँचे जा पहुंचा, उन अनगिनती मसालों के प्रकाश में वह बिजली की तरह चमक रहा था और उस्का निस्सहाय शिकार, उसके नीचे पृथ्वी पर तड़प रहा था।

हेक्टर ने उठने का उद्योग किया, और साथही उस निर्दयी जल्लाद के पैरों से लपट कर बल करने लगा परन्तु कुछही काल में वह भूमि के साथ दबा दिया गया, और वह खांड़ा चमक कर ऊपर से नीचे की ओर चला।

बस ठीक इसी हृदयविदारक समय में जब कि हेक्टर की गरदन बाल से भी विशेष पतली हो रही थी एक गरजता हुवा शब्द बड़े बेग से सुन पड़ा "हेक्टर ! यदि जान प्यारी है तो इस रस्सी की सीढ़ी को उछल कर पकड़ लो" और इन शब्दों के साथही एक बन्दूक के दगने का शब्द सुन पड़ा और फायेर

के साथही साथ वह जल्लाद बड़ी ज़ोर से चिल्ला कर धम से भूमि पर लोट गया ।

हेक्टर खुशी से उछल पड़ा और उसने कूद कर उस रस्सी की सीढ़ी को अपने हाथों में जोर से पकड़ लिया और साथही ऊपर से शब्द सुन पड़ा "जल्दी खींचो" अब हेक्टर की समझ में कुल बातें आ गईं। उसने एकही साथ ऊपर से हर्ष की किलकारी और नीचे से भयानक चिंघाड़ सुनीं । सीढ़ी बड़ी शीघ्रता से ऊपर खींची जाने लगी, ऊपर जाते २ हेक्टर के हाथों में किसी चीज का बड़ी जोर से धक्का लगा जिस्से इसे भय हो गया कि सीढ़ी अब हाथ से छुटी ! परन्तु नहीं ! ईश्वर ने कुशल किया और वह फिर सँभल गया । सम्भलतेही अब नीचे से गोलियां आनी प्रारम्भ हुईं जो बिना किसी निशाने के छोड़ी जाती थीं । कितनीही सनसनाती हुई इस्के आस पास से निकल गईं ।

अब उसे खटोलने की सूरत उस अन्धकार में दिखलाई पड़ने लगी, यहां लों कि कुछ हाथों ने पकड़ कर उसे खटोलने में खींच लिया ।

क्षण भर के उपरान्त जब हेक्टर ने नीचे की ओर दृष्टि की तो अपने को पृथ्वी से बहुत ऊंचा पाया औ अब न तो मशालों की रोशनीही कहीं दिखलाई पड़ती थीं, और न बन्दूकों का शब्दही कान में आता था, जिस्से इसे बड़ा आश्चर्य जान पड़ा कि गुब्बारा तो आखिर झोंपड़ेही पर था वह सब दृश्य

हठात् गायब हुवा तो कैसे हुवा ! अन्त जब इसने बड़ेही ध्यान-पूर्वक देखा तो जान पड़ा कि गुब्बारा उड़ा जाता है और यही कारण उन सब चीजों के न दीख पड़ने का था। सर बिल्फ्रेड ने रस्सी लङ्गर सहित पहिलेही काट दी थी !

हेक्टर खटोलने में आतेही गहिरी नींद सो गया और जब वह उठा तो उसने अपने चारों ओर धूप फैली पाई और कप्तान साहब को काफी का प्याला अपने होठों से लगाते पाया। इस उत्तम बस्तु ने हेक्टर की खोई हुई स्मरणशक्ति को पुनः एकत्रित कर दिया। अब उस्को गत रात की घटना स्वप्नवत् मालूम होती थी। उसे प्रथम तो बिश्वासही नहीं होता था परन्तु जब वही सब बृत्तान्त अपने साथियों द्वारा सुना तो ईश्वर का धन्यवाद अपने छुटकारा पाने पर करने लगा।

सर बिल्फ्रेड—अजी न मालूम ईश्वर को क्या करना था जो अबलों तुम्हें जीवित रक्खा ; भई हमारे इस जीवन में कई बार भारी से भारी आपत्तियों का सामना पड़ा परन्तु इस तुम्हारी आपत्ति से कम ! और छुटकारा भी बड़ेही बिचित्र तरह से हुवा। इस्का बृत्तान्त यों है कि गुब्बारा अन्धकार में अपनी राह छोड़ कर राज्य डेहोमी में आ गया था, और इस मूरति में जो उस झोंपड़े पर रक्खी थी उतका लङ्गर अटक गया था। और उधर आज कल शाह डेहोमी और फ्रांसीसियों में लड़ाई छिड़ी हुई है जो आश्चर्य नहीं कि कहीं उसी गांव के पास होंगे, तथापि डेहोमी अपने बैरियों को उसी मूरति पर बलि चढ़ा-

करते हैं। बरछे पर रक्खे हुये वे सिर और झण्डा इस्बात की गवाही के निमित्त बहुत हैं। हां तो जैसेही तुम पकड़े गये, वैसेही हम इस सीढ़ी को पकड़ कर नीचे उतर गये, और एक धरन पर खड़े होकर उस खुली जगह से तुम्हारी नीचे की सब अवस्था देखने लगा था। तुम अनुमान कर सक्ते हो कि उस समय मेरा रक्त कैसा उबलता था। यदि तुम मारे जाते तो मुझपर एक देशी के मरवा डालने का कितना बड़ा कलङ्क लगता है, और यदि कहीं उन राक्षसों की दृष्टि बेलून पर पड़ती है तो एकही गोली उसका काम तमाम करने को बहुत है! और फिर हम लोगों का भ्रमण और तुम्हारे पिता की खबर और सब पर यह, कि अपने प्राणोंही से हाथ धोना पड़ता। अस्तु मैं ईश्वर पर निर्भर हो वहां चुपका बैठा था। उनकी भाषा भी मुझे कुछ आती है इससे मैं उनकी बातें समझ गया। वे तुम्हें फरांसीसी जासूस समझे हुये थे और फरांसीसी सिपाहियों को उत्तम शीक्षा देने के लिये तुम्हारा सिर काट कर उनके केम्प में फेंक आने की इच्छा किये हुये थे। इससमय एक चाल मेरे ध्यान में आई! और वह यह कि मैंने गुब्बारे को उस छत के निकट इतना खींचा कि खटोलना छत पर आ गया तब उसे मैंने लङ्गर में अटका दिया, साथही कप्तान जोली से एक विशेष इशारे पर दो बालू के थैलों को पृथ्वी पर फेंक देने के लिये कह दिया। चेंको से यह कह दिया कि वह भी उसी इशारे पर कुल्हाड़ी से रस्से को काट दे। फिलिप के हाथ में रस्सी की सीढ़ी दे

दी कि वह हमारे कहतेही उसे उस खुली जगह के भीतर लटका दे, और मैं हाथ में बन्दूक ले कर उसी खिड़की पर बैठ गया।

जो कुछ सोचा था वह सब ठीक हुवा, जल्लाद को गोली से मारा, और तुम्हें सीढ़ी पर ऊपर खींच लिया, बस उसी समय चेको और जोली ने भी अपना २ कर्तव्य साधन किया और इसतरह तुम उन राक्षसों से छूटकर यहां आये! ईश्वर का बहुत २ धन्यवाद है।

यह कह कर सर बिल्फ्रेड लेट गये और हँसने लगे।

पांचवाँ बयान।

सर बिल्फ्रेड बड़ेही शान्तिरूप से बोले; "परन्तु भइ वास्तव में तो यह हँसने का स्थान नहीं है। अब यदि ईश्वर न करे कहीं पुनः ऐसी आपत्ति मे पड़े तो मैं नहीं जानता कि उससे तुम्हें कैसे उद्धार करूंगा। ये जङ्गली समझेही नहीं कि तुम कैसे छूटे, यद्यपि उन्होंने सैकड़ोही गोलियां ऊपरकी ओर मारीं परन्तु उन्हें गुब्बारा बिलकुल नहीं दिखाई पड़ा था।

कप्तान—मेरी हड्डियांही गलें जो मैं ऐसे आपत्ति में पड़ जाने की इच्छा भी करूं!

सर बिल्फ्रेड—(शान्त भाव से) भई अभी यह कोई नहीं कह सक्ता कि आगे क्या होगा अभी तो यह श्रीगणेशही है।

हेक्टर—क्यों महाशय! क्या वास्तव में शाह डेहोमी के पास स्त्रियों की फौज है ?

सर बिल्फ़्रेड—हां ! शाह डेहोमी के पास स्त्रियों की फौज है जो कुल अफ्रिका में ईश्वर के कोप के तुल्य गिनी जाती हैं। यह स्त्रियां जिनकी फौज २० हजार की है शाह डेहोमी के फौज की जान गिनी जाती हैं, वह अपनी निर्दयता, पाजीपन, कड़ाई, और दिलेरी के लिये विख्यात हैं। इनकी कवायद बड़ी कड़ी है और वे बड़ीही चालाकी से लड़ती हैं बस इस्का सबूत यह है कि फ्रांसवालों के इन्होंने छक्के छुड़ा दिये। यह बहुतही बुरा हुआ कि वायु बदल गई और हम अपनी राह से भटक गये। इससमय, अब हम ठीक राह पर जाते हैं और प्रत्येक घण्टे ३० मील में के हिसाब से जा रहे हैं।

फिलिप—भला शाड झील यहां से कितनी दूर होगी ?

सर बिल्फ़्रेड—बस यही कोई आठ हजार मील के लगभग होगी।

फिलिप—हां ! आठ हज़ार मील ! तो क्यों महाशय वहां पहुंचेंगे भी ?

सर बिल्फ़्रेड— हां क्यों नहीं यदि वायु ठीक मिलती जाय ! यद्यपि हमारी गेस कुछ कम हो गई है, परन्तु कोई परवाह नहीं। अच्छा अब पहिले भोजन तो करलें फिर ऐसी बातें हुवा करेंगी।

कप्तान जोली को धन्य है ! जिन्हों ने खाने का पहिलेही से उचित प्रबन्ध कर रक्खा था। सब ने बिसकुट और गोश्त बड़े

मज़े के साथ खाया और अन्त में एक २ प्याला कहवे का पी लिया।

सूर्य देव अब बहुतही ऊंचे हो गये और वे वायु में भ्रमण करनेवाले ऐसे उत्तम दृश्य को देख कर फूले न समाते थे गुब्बारा इससमय पृथ्वी से नौ सौ फ़ीट की ऊँचाई पर पृथ्वी के के अनेक भागों पर से उड़ा जाता था। बन और हरियाली के मैदान, पहाड़ियां, झीलें, और बहुत सी नदियां उन झोंपड़ों सहित जो उनके इधर उधर बने थे एक २ करके नेत्रों के सामने आते और अदृश्य होते चले जाते थे।

स्थान २ पर जङ्गली मनुष्यों के झुण्ड के झुण्ड झोंपड़ें से बाहर निकल कर आश्चर्य से मुंह बाय २ ऊपर की ओर देख रहे थे।

सहसा अब पूर्व दिशा की ओर कोई काली २ वस्तु बड़ी दूर तक फैली हुई दिखाई पड़ने लगी। सर बिल्फ़ेड ने इसे देखतेही कहा कि यह कोंग नामी पर्वत है इसी के उस पार ना-ईज़र नामी बड़ी नदी बहती है, आशा है कि हम दोपहर के पहिले उसे पार कर लेंगे।

एक घण्टे के उपरान्त ये लोग पारबा देश के ऊपर से होकर जाने लगे। पृथ्वी का यह भाग एक बड़ीहीं भयानक जाति [illegible] बसा हुवा था, यहां से अब कोंग पर्वत भली प्रकार दिखाई [illegible]ड़ने लगा।

सर बिल्फ्रेड जो इस प्रान्त के भुगोल के भली प्रकार ज्ञाता थे अपने साथियों को समझाते और आश्चर्यजनक विषय बताते चले जाते थे इस्तरह राह भी बहुत शीघ्र पीछे छूटने लगी। दो पहर से कुछ पहिले जैसा कि सर बिल्फ्रेड ने भविष्य बाणी की थी कोंग पर्वत की बरफ से ढँकी हुई चोटियां जल्दी २ निकट आने लगीं।

सर बिल्फ्रेड—अपने २ कम्बल निकाल लो क्योंकि हम अब और ऊंचे जाँयगे।

यह कहकर उन्होंने बालू के दो थैले नीचे फेंक दिये जिस्से गुब्बारा अब दो हज़ार दो सौ फीट की उंचाई पर हो गया।

इस पर्वतश्रेणी के कुछ भाग, इस उंचाई से भी कहीं विशेष ऊंचे थे। सर बिल्फ्रेड बड़ीही उत्सुकता से आनेवाले समय की प्रतीक्षा कर रहे थे। सर्दी इस समय बड़ीही कड़ी पड़ रही थी, यद्यपि सब लोग कम्बल ओढ़े थे पर तौभी मारे शीत के अकड़े जाते थे। १२ बजे गुब्बारा एक चौड़ी घाटी के बीच से कि जिस्के दोनों ओर दो बड़ी २ चोटियां उठी हुई थीं जाने लगा। आधे घण्टे तक बायु पर भ्रमण करनेवाले ये पथिक एक ऐसे मनोहर और बिशाल दृश्य को देख रहे थे कि जिस्का जोड़ पृथ्वी के बहुत कम भागों में पाया जाता है। इनके दोनों ओर पहाड़ियां सिर से पैर तक बड़े भारी और हरे २ बृक्षों से ढँकी माथा उठाये खड़ी थीं। इन में कहीं

बड़ी गुफायें जङ्गली लताओं से भूषित दिखाई पड़ती थीं। स्थान २ पर चांदी के रङ्ग के सोते अठखेलियां करते नीचे की ओर बह रहे थे। इनके ऊपर पर्वत की बड़ी २ चोटियां जो बरफ से ढँकी खड़ी थीं सूर्य की किरनों के पड़ने से बड़ाही बिचित्र तमाशा दिखाती थी अर्थात् अनेक प्रकार के रङ्गों की किरनें अपने देखनेवालों पर डाल रही थीं। अब इस्के उपरान्त छोटी २ पहाड़ियाँ और फिर ढालुवां और हरे मैदान का तांता प्रारम्भ हुवा।

इधर सबने मिलकर अब भोजन की सामग्री एकत्रित की और आपस में बैठकर बड़ीही इच्छापूर्वक अपनी तृप्ति की।

ठीक दो बजे गुब्बारा नदी नाइज़र के ऊपर से होकर जाने लगा। इस नदी के दोनों किनारों पर फूस के बने हुये झोपड़ों का तांता था।

इस्के एक घण्टे के उपरान्त सर बिल्फ्रेड ने कम्पास और नकसे को देख कर कहा कि हम लोग इस समय ठीक पूर्व और उत्तर के कोने में जा रहे हैं चाल हमारी बड़ीही तेज़ है। हमारे नीचे गेंड़ो देश है जो एक बड़ेही भयानक सुलतान के अधिकार में है। उक्त सुलतान नित्य प्रातः काल दस गुलामों की गर्दन अपने किले के सामने कटवाता है और इस्के १५०० महल हैं। इनबातों के उपरान्त सर बिल्फ्रेड ने कुछ गेस निकाल दी जिस्से गुब्बारा पांच सौ फीट की ऊंचाई पर आ गया। और वे कहने लगे कि अब इसे ईश्वर की राह पर छोड़ देना चाहिये।

गत रात्रि को कोई भी नहीं सोया था सो अब फिलिप एक ओर लेट गया, सर बिल्फ्रेड और कप्तान जोली ने शतरञ्ज बिछाई ! और हेक्टर उस खेल को देख कर अपने मन में बिचारने लगा कि सर बिल्फ्रेड भी क्याही विचित्र मनुष्य हैं ! वह जानतेही नही कि भय क्या पदार्थ है अब इसी समय देखो कि कैसे आनन्द से बैठे शतरञ्ज खेल रहे हैं मानो लेगोस के किसी महल के कमरे में आप बिराजमान हैं । कोई आश्चर्य नहीं ! यदि इस्के एकही घण्टे के उपरान्त किसी ऐसी बात को सोचना पड़े जिस्में जीवन का वारा न्यारा हो, पर इस्की इन्हें कोई भी चिन्ता नहीं ! तनिक नेपोलियन का वाटरलू के मैदान में शतरञ्ज का खेलना याद कीजिये ! कैसी असम्भव बात मालूम होती है । यदि नेपोलियन भी इसी स्वभाव का मनुष्य होता तो आशा है कि तवारीख का पृष्ट दूसरेही तरह लिखा जाता । अन्त हेक्टर भी सो गया ।

सर बिल्फ्रेड ने सन्ध्या तक कप्तान साहब से कितनहीं बाजी जीती और जब सूर्य अस्त हो गया तो शतरञ्ज उठा दी !

सर बिल्फ्रेड ने कम्पास देख कर कहा कि अभी लों हम सीधी राह पर हैं ; बायु का बेग, जो हमें लाभदायक है बढ़ताही जाता है । इस्की मुझे आशा भी न थी । परन्तु आह जोली ! ईश्वर बचाये अबकी हमलोग बुरे फँसे ! जान बचाने को, इस बेर फिर एक कड़ा उद्योग करना होगा, देखो उधर देखो !

सर विल्फ्रेड का अनुमान ठीक था, पश्चिम की ओर से बड़े २ काले २ बादल शीघ्रता उठ रहे थे और उन्हीं के साथही साथ वायु भी प्रचण्ड होती जाती थी । इसी के तेज़ होने से सर बिल्फ्रेड बड़े प्रसन्न हुये थे परन्तु अब बातही और हो गई ! इतने में बिजली भी चमकी और उन्हों ने कहा ईश्वर मङ्गल करे तूफान भी साथही साथ है। परन्तु अभी तक हमारा बचना असम्भव नहीं है ! जोली ! उत्तम होगा कि हम अपने साथियों को जगा दें और कुछ भोजन भी करा दें जिस्में आनेवाली आफत का सामना करने में हमलोगों का पेट खाली न रहे ।

छठवां बयान ।

कप्तान साहब ने भोजन की सामग्री एकत्रित करके अपने साथियों को जगा दिया परन्तु उनसे आनेवाले भय का समाचार न कहा । अब चारों ओर घोर अन्धकार फैलने लगा । उधर कप्तान साहब भोजन की तैयारी कर रहे थे और इधर सर बिल्फ्रेड अपने साथियों को सुस्त देखकर उनका चित्त इधर उधर की मनोरञ्जक घटना से बहला रहे थे ।

सर बिल्फ्रेड—अब हमलोग राज्य सोफोटो के ऊपर से जा रहे हैं यहां के रहनेवालों को फल्ब' कहते हैं । फिलिप ! यह बड़ी भयानक और जङ्गी जाति है इस्के उपरान्त राज्य बोरेन है और फिर उस्के बाद से शाड भील प्रारम्भ

हो जाती है। ईश्वर ने चाहा तो प्रातः काल पर्यन्त वह हमें दिखाई देने लगेगी।

इस्के उपरान्त उन लोगों ने भोजन किया। बेलून अब क्रमशः नीचे की ओर उतरता जाता था, अभी तक इतना प्रकाश बाकी था कि वृक्षों के झुण्ड धुँधले २ दिखलाई पड़ते थे।

सर विल्फ्रेड—मेरी समझ में नहीं आता कि मैं अब क्या करूं। यह बेतरह सन्नाटा किसी आनेवाले बड़े तूफान का समाचार दे रहा है। अब छुटकारे के केवल दोही रास्ते बाकी हैं एक तो यह कि हम निरर्थक असबाब फेंक दें तो तूफान की सीमा से ऊपर जा सक्ते हैं और फिर यह तूफान और बिजली सब हमारे नीचे रह जाँयगे परन्तु ऐसा करने में पाहिले तो हमें बहुत से असबाब से हाथ धोना पड़ेगा दूसरे बहुतसी गेस व्यय करनी पड़ेगी और फिर वह इतनी कम रह जायगी कि शाड झील पर्यन्त पहुँचना कठिन हो जायगा। दूसरी तदबीर यह है कि किसी खुली हुई जगह में बेलून को उतारें और वृक्षों के बीच में इसे फँसा दें, इस्में भी बड़ा भय है एक तो बिजली का दूसरे वृक्ष की डालों का कि कहीं गुब्बारे में लग कर वे उसे फाड़ न दें।

यह कह कर वे अपने साथियों की ओर उनकी इच्छा जानने के निमित्त देखने लगे। फिलिप की तो यह राय थी कि ऊपरही चढ़ चलें परन्तु हेक्टर और कप्तान जोली नीचे की

ओर जाना अच्छा समझते थे; चेको ने कुछ न कहा! वह एक कोने में बैठा बिस्कुट खा रहा था।

सर बिल्फ्रेड—नीचे जाना बहुतही उत्तम होगा! वास्तव में इस्के अतिरिक्त और कोई राह प्राण बचाने की नहीं है! ओफोह! देखो तो तूफ़ान कितना शीघ्र बढ़ा चला आता है!!!

यह कहकर उन्हों ने तूफ़ान की ओर इशारा किया, यद्यपि उस अन्धकार में तूफ़ान की कालिमा कुछ भी न दिखाई पड़ती थी परन्तु तारों के जल्दी २ छिपने से तूफ़ान का आगमन जान पड़ता था। इतनेही में बिजली बेग से चमकी और चमक कर गुब्बारे के इधर से उधर निकल गई!

सर बिल्फ्रेड—अब आगे बढ़ना मूर्खता का काम है, कहीं ऐसा न हो कि बिजली से गेस भड़क उठे; अब शीघ्र नीचे उतरना चाहिये।

यह कहकर उन्होंने लङ्गर फेंक दिया जो बृक्षों में जकड़ कर रह गया। सर बिल्फ्रेड ने रस्सी की सीढ़ी नीचे लटका दी और उसी पर से वे उतर आये। नीचे जाकर उन्होंने आवाज दी! "हेक्टर! एक लालटेन जलती हुई और रस्सा लेकर नीचे उतर आओ"। साथही हेक्टर ने जबाब दिया "आया" और तुरन्त ऊपर कही हुई बस्तुओं को लेकर नीचे उतर गया। नीचे जाकर उसने देखा कि लङ्गर भूमि से ३० फ़ीट ऊँचे एक बृक्ष में फँसा हुआ है और सर बिल्फ्रेड उसी की डालियों पर बैठे हुये हैं, हेक्टर से रस्सा लेकर उन्हों नें एक बड़ी भारी डाल में

बाँध दिया और रस्से के दूसरे सिरे में लालटेन बाँधकर हेक्टर से कहने लगे कि अब तुम पृथ्वी पर उतरो मैं राह में तुम्हें उजाला दिखाऊँगा। हेक्टर बिना किसी परिश्रम के नीचे उतर आया और पृथ्वी पर खड़ा हो गया।

सर बिल्फ्रेड—(ऊपर से) अब तुम इस रस्सी को दृढ़तापूर्वक पकड़े रहो मैं इस्का दूसरा सिरा लङ्गर से बाँधकर अभी आता हूं।

हेक्टर ने रस्से से लालटेन को खोल लीं जो इसी के साथही साथ प्रकाश दिखाती सर बिल्फ्रेड द्वारा लटकाई गई थी! और बड़ी दृढ़ता से अपनी कमर में लपेट कर पकड़े रहा। अब उसे जान पड़ा कि गुब्बारे का कुल खिंचाव उसी पर है। इस्के पैर पृथ्वी से उठे जाते थे बरन् कई बेर तो वह उठते २ रह गया। यह देखकर वह चिल्ला उठा "सर बिल्फ्रेड शीघ्र आओ मैं खिंचा जाता हूं"।

सर बिल्फ्रेड—लो मैं आ गया।

यह कह कर उन्होंने भी रस्से को दृढ़ता से पकड़ लिया और दोनों व्यक्ति उसे पकड़े हुये बन में इधर उधर किसी खुले मैदान की खोज करने लगे। अभी वे कुछ दूर भी न गये थे कि एक बीस फीट का लम्बा मैदान मिल गया। भाग्य-बश मैदान के एक कोने में एक मोटा और लम्बा गिरा हुआ बृक्ष पड़ा था। सर बिल्फ्रेड ने इसी में उस रस्से को जकड़ दिया और दोनों मिलकर गुब्बारे को नीचे खींचने लगे।